

भटका हुआ देवता - Think! Who are you?

सोऽहम्- (मैं वही हूँ) मैं वही हूँ, जिसे नियन्ता ने सर्वश्रेष्ठ मानव योनि में भेज दिया। मेरे लिये उच्च मानवीय क्षमताएँ सहज सुलभ हैं। मैं साधक हूँ, जिसे युग ऋषि ने युगतीर्थ में रहकर साधना करने का अवसर दिया। साधक का कोई क्रम मेरे लिए कठिन क्यों होगा?

1. SOHUM (I am That): Indeed potentially I am That Absolute Truth - Consciousness incarnated in human form. Attaining higher spiritual levels are easy for me. I am a Sadhak (devotee) whom Yug Rishi has given an opportunity to do Sadhana towards Self-Realization.

शिवोऽहम्- (मैं शिव रूप हूँ) शिव-अर्थात् कल्याणकारी। मैं मूलतः शिव कल्याणकारी हूँ। मेरे भावनाओं, विचारणाओं, इच्छाओं, चेष्टाओं, अभ्यास आदि में अशिव का कोई स्थान कैसे हो सकता है? यदि पदार्थ के संसर्ग से कुछ चिपक गया है, तो वह विजातीय, उसे हटाने में क्या संकोच, क्या कठिनाई?

2. SHIVOHUM (I am akin to Lord Shiva): Shiva means auspicious. Essentially I am a blessed person; so how can there be any place for evil in my thoughts, feelings or actions? If any inappropriate trait has stuck to me due to bad company/surroundings, it is foreign to my essential nature and I resolve to rid myself of this dross.

सच्चिदानन्दोऽहम्- (मैं सत् चित् आनन्द रूप हूँ) मैं असत् से प्रभावित क्यों होऊँ? मैं जो शुभ नहीं टिकाऊ नहीं, उसे क्यों चाहूँ? मैं आनन्द हूँ, पदार्थों में खोजता हुआ क्यों भटकूँ। मैं श्रेष्ठतम में ही रस क्यों न पैदा कर लूँ? आदि।

3. SACHCHIDANANDOHUM (My intrinsic Nature is – Truth – Consciousness – Bliss): Why should I be affected by falsehood? Why should I chase a mirage? I am innate bliss; why should I vainly seek happiness in the transient world?

अयमात्मा ब्रह्म- (यह आत्मा ही ब्रह्म है) सागर भी जल है- बूँद भी तो जल ही है। हर किरण में सूर्य का गुण है। आत्मा चाहे जितना छोटा अंश हो, उसमें ब्रह्म की जुड़ने की क्षमता है और उससे जुड़ने के बाद छोटा-बड़ा क्या? नल की टोटी और विशाल टंकी- दोनों में पानी देने की समान क्षमता है, तो दीन क्यों बनूँ? समर्थ बनकर क्यों न रहूँ?

4. AYMATMA BRAHMA (Thy soul is a Spark of Brahma (Divine)): As the ocean is water so also is a drop. Every ray of the Sun has the qualities of its Radiator. Howsoever small the Soul confined by the ego may seem it has the capacity of uniting with its origin – Brahma. Both tap and tank are capable of giving water. So why should I remain caged in the false sense of identity with the ego and feel miserable; why not become Omnipresent?

तत्त्वमसि- (वह तुम्हीं हो) जीवन में-संसार में जो कुछ भी श्रेष्ठ है, वह सब तुम (परमात्मा) ही तो हो। हर दृश्य प्रकाश ही तो है। फिर श्रेष्ठता खोजता क्यों भटकूँ? पदार्थ की गुलामी क्यों करूँ? सारी श्रेष्ठता तुममें-हर श्रेष्ठता में तुम्हें ही क्यों न देखूँ?

5. TATVAMASI (You are That): You inherit the attributes of the Supreme Soul and the whole creation is your embodiment. We are sparks of the Eternal and Imperishable spirit and our souls are here on their upward path to immortality. The essence of our Being is the Supreme Spirit (Parmatma – Brahma) – the source of the creative cosmic play; and we are here to awaken to the Reality of true identity.